असमिया शिशु गीत

- स्मिता साह

शोध-सार : असमिया शिशु गीत या निसुकनी गीत असमिया लोकगीत का ही अंग है जो मनोरंजन पर आधारित होता है। इन गीतों का सृजन शिशु की मनःस्थिति को ध्यान में रखकर बड़ी ही सावधानी से चिंतन-मनन करके किया जाता है। ये गीत एक्शन आधारित होते हैं। शिशु गीत मुख्य रूप से बच्चों को सुलाने, मनाने, उनका मनोरंजन करने तथा नैतिक शिक्षा देने के उद्देश्य से लिखा जाता है। असमिया शिशु गीत में असमिया के ग्राम्य भाषा के साथ-साथ असमिया समाज के लोक-संस्कृति की झलक भी मिलती है। ये गीत इतने सहज-सरल भाषा में रचे जाते है कि इन्हें कंठस्थ करना आसान होता है। ये गीत शिशु के बौद्धिक विकास में सहायक होते हैं इसलिए इन गीतों का महत्व बढ़ जाता है। आज भी समाज में शिशु गीत की प्रासंगिकता बनी हुई है। असमिया शिशु गीत के माध्यम से बच्चों की मानसिक स्थिति के साथ ही असमिया समाज की संस्कृति तथा उसके विविध पहलुओं को जानने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द : असमिया, लोकगीत, शिशु गीत, संगीतात्मक, खेल गीत ।

मूल आलेख : शिशु गीत की परंपरा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। विश्व की प्रायः सभी भाषाओं में शिशु गीत का प्रचलन हैं। शिशु गीत कविता या गीत के रूप में बच्चों को सिखाने, मनाने, नैतिक शिक्षा देने आदि के उद्देश्य से बनी है। असम में भी शिशु गीत का प्रचलन अत्यन्त पुराना है। अन्य भाषाओं की भाँति असम में भी शिशु गीत लोकगीत का ही एक प्रधान अंग है। असमिया में शिशु गीत को 'निसुकनी गीत', 'उमला गीत', 'धाईनाम' आदि नामों से जाना जाता है। 'खेल गीत' भी शिशु गीत के अंतर्गत ही आते हैं। बच्चों को मनाने, उनका मन बहलाने और सुलाने के प्रयास से शिशु गीत का जन्म होता है। माँ के लिए संतान जिस तरह प्यारे है, ये गीत भी असमिया जाति के लिए उसी तरह प्यारे है। माताएँ अपने छोटे से बच्चे को सुलाने के लिए निसुकनी गीत गाती है। माँ बच्चे को गोद में लेकर हिलाती-डुलाती है तथा अपने बाहों को ही वह झूला बना लेती है और संगीतात्मक स्वर में गीत गाकर अपने बच्चे को सुलाती है। बच्चे भी संगीत सुनकर मंत्रमुग्ध होकर सो जाते हैं। उनका मन शांत और आनंदमय हो उठता है। इसलिए बच्चों को सुलाने, खिलाने, नहलाने आदि क्रियाएँ करते समय गीत गाकर उनके मन को बहलाते हुए ये सारे कार्य किए जाते हैं। बच्चों में जन्म से ही ध्वनि, वाणी और संगीत को ग्रहण करने की क्षमता होती है। इसलिए शिशु गीत की मधुरता बच्चे के मन को आनंदमय बनाती है।

शिशु गीत बोधगम्य, रुचिपूर्ण एवं बालमनोभावों से युक्त सरल शब्दों में बच्चों के लिए रचा गया एक सृजनात्मक साहित्य भी होता है। यह बच्चों के मनःस्थिति को ध्यान में रखकर बड़े सावधानी पूर्वक एवं चिंतन करके लिखा जाता है। शिशु गीत बच्चों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उनके विकास में सहायक भी होते हैं। माँ द्वारा गायी जाने वाली शिशु-गीत जन्म लेने वाले बच्चे के लिए सबसे पहला बाल साहित्य होता है। बच्चों को चलना सिखाने, शारीरिक अंगों के बारे में बताने, गिनती सिखाने तथा अन्य अनेक सामग्री के बारे में बताने के लिए भी शिशु गीत का प्रयोग किया जाता है। एक तरह से देखे तो शिशु गीत बच्चों की संस्कार यात्रा होती है। ये गीत बच्चों के लिए वैसे ही आवश्यक होते है जैसे बड़ों या किशोरों के लिए कविता, कहानी आदि।

शिशु गीत (निसुकनी गीत) में मातृमन की आशा-आकांक्षा तथा अपने बच्चे के प्रति बहुत सारा प्यार छुपा होता है। इन गीतों के माध्यम से वह अपने बच्चे की उज्जवल भविष्य की कल्पना करती है। ये गीत माँ की ममता की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। इन गीतों के माध्यम से माँ बच्चे के प्रति अपने भावों को व्यक्त करती है। शिशु गीत के माध्यम से माँ अपने बच्चे को दादा-दादी, नाना-नानी, भाई-बहन आदि रिश्तों के बारे में बताती है। भले ही माँ द्वारा गायी गई यह गीत बच्चे को समझ में नहीं आती है, लेकिन इन गीतों की मधुर ध्वनि, मधुर सूर में वह सम्मोहन शक्ति होती है, जो बच्चे के मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालती है। बच्चा गीत के मधुर स्वर को एकाग्रचित होकर ध्यान से सुनता रहता है। जिससे उसे माँ की गोद में मधुर आनन्द की अनुभूति होती है और धीरे-धीरे उसे नींद आ जाती है। बच्चों की नींद अच्छी तरह पूरी होने से उनकी गतिविधियों में सुधार होता है वे खुश एवं सक्रिय रहते हैं।

शिशु गीत शिशु केन्द्रित होती है अर्थात् शिशु को केन्द्र में रखकर ही सहज-सरल रूप में इन गीतों की रचना की जाती है। शिशु गीत में शिशु के मनःस्थिति के विभिन्न रूपों का चित्रण किया जाता है। बच्चों में रूठना, जिद्द करना स्वाभाविक है, इसकी कोई सीमा नहीं होती है। उनको चुप कराना या शान्त कराना आसान नहीं होता है। क्योंकि वे कुछ भी नहीं समझते हैं। किन्तु इन गीतों में ऐसा मधुर निवेदन होता है कि ये गीत बच्चों के मन को बहलाने में सफल होते हैं तथा उन्हें आनन्द प्रदान करते हैं। बच्चों का मन बहुत ही कोमल होता है। वे कल्पनाशील होते हैं। वे वास्तविक व अवास्तविक, लौकिक-अलौकिक घटना या कार्य के बीच कोई भेद नहीं कर पाते हैं। इसलिए इन गीतों में कल्पना की बहुलता दिखाई पड़ती है। निसुकनी गीत में चन्द्रमा, पक्षी, जीव-जन्तु, कीट-पतंग, नदी-झरना, भूत-प्रेत, परी, अपशराएँ, ईश्वर, दानव आदि सभी को समेटे हुए कल्पना के माध्यम से एक काल्पनिक जगत की सृष्टि करते है और उस जगत में शिशु को ले जाते है। शिशु इन गीतों को सुनकर उस कल्पना जगत में विचरण करता है। यह जगत कल्पना से भरा होता है और बच्चे इसे सही मानते हैं। बच्चे कल्पना के द्वारा 'जुनबाई' यानि चंद्रमा से बाते करते है और चंद्रमा भी उनसे बाते करते हैं। चंद्रमा से बच्चों के बातों का एक उदाहरण द्रष्टव्य है:-

"जुनबाई ए एटि तरा दिया

एटि तरा नालागे, दूटि तरा दिया
पात नाई, सूत नाई किहत करि दिम
हालधीया सराये बाउधान खाय
खहुधरर पूतेके नाउ मेलि जाय
नावे बूले टूलूंग भूटूंग बठाई बूले बाउ
गधूलीते गधूलीते डबा कुबाउ।"[1]

इस गीत में चंद्रमा के साथ बच्चे के बातचीत एवं क्रिया-कलाप को दिखाया गया है। बच्चा चंद्रमा से एक दो तारे माँगता है, फिर चंद्रमा बच्चे से कहता है वह तारे कैसे देगा, तारे देने का कोई साधन नहीं है। फिर पीली चिड़िया बाउधान खाती है। खहुधर का पुत्र नाव लेकर जाता है, नाव टूलूंग भूटूंग करके यानि हिलते-डुलते हुए नदी पार करता है तथा संध्या समय में नामघर में डमरू बजता है। इस तरह गीत पूरी होती है। यहाँ हम यह देख सकते हैं कि गीत के कथन के बीच कोई अंग-अंगी सम्बन्ध नहीं है। कोई भाव व्यक्त नहीं हो रहा है। लेकिन शिशु मन कल्पना के द्वारा इन कथनों के बीच भी एक सम्बन्ध सूत्र बाँध ही लेता है और वह आनन्दित हो उठता है।

शिशु गीत में शिशु के शैशव काल की मुखमण्डल की ज्योति, आनन्द, खुशी, रोना-धोना, भय-विस्मय, हर्षोल्लास, कल्पना, कौतूहल, विश्वास-अविश्वास सब मिले हुए होते हैं। इनमें शैशव के देवत्व, नवीनत्व और लालित्य समाया रहता है। प्रत्येक माँ को अपने बच्चे में कृष्ण कन्हैया की छवि ही नजर आती है। वह अपने बच्चे को कन्हैया के नाम से पुकारती है तो कभी वह स्वयं यशोदा मैया बन जाती है। माँ अपने कान्हा को सुलाने के लिए अनेक प्रयत्न करती हुई लोड़ी सुनाने लगती है। असमिया में कुछ इस प्रकार के गीत भी है :-

"जखुदा माव मथनी थूवा
कृष्णई कांदिसे कुलात लुवा।"[2]

इस गीत में कृष्ण कन्हैया रो रहे है इसलिए सखियां मैया यशोदा को माखन मथना छोड़कर कृष्ण को गोद में लेने और उसका मन बहलाने के लिए कह रही है।

बच्चे फल-मूल आदि के प्रति अधिक आकर्षित होते है। विशेष रूप से आम, कटहल, बैर, जामुन, लीची, अंगूर आदि बच्चों के बड़े प्रिय फल होते हैं। इसलिए असमिया शिशु गीत में इन फलों का उल्लेख भी मिलता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है :-

"आमारे मईना खूब ए

[1] नेउग, महेश्वर (2008), असमिया गीति-साहित्य, अरोरा फाइन आर्ट्स बामूनी मैदाम, गुवाहाटी-21, पृ.स. 17
[2] बरुआ, बिरिञ्चि कुमार (2015), असमर लोक-संस्कृति, बीना लाब्रेरी, गुवाहाटी पानबाजार, पृ.स. 42

बारीते बगरी रूब ए
बारीरे बगरी पकी खरी ग'ले
मईनाई बूटली खाब।"[3]

इस गीत में बच्चों को सुलाने तथा उनके मन को बहलाने का प्रयास किया जा रहा है। बच्चों के मन को बहलाना आसान नहीं होता है इसलिए माँ तरह-तरह के प्रलोभन देकर गीत गाकर उनके मन को बहलाने का प्रयास करती है। माँ इस गीत में कह रही है कि मईना बगीचा में बैर का पेड़ रोपेगी, जब पेड़ बड़ा हो जाएगा और उसमें बैर पक कर गिरने लगेंगे तब मईना उन बैरों को चुनकर खाएगी और मईना सो जाएगी।

कभी-कभी बच्चों को चुप कराना बहुत मुश्किल होता है। तब माँ 'हाउ' आया है बोलकर बच्चे को डराती भी है। क्योंकि बच्चे डर लगने पर भी शान्त हो जाते हैं। 'हाउ' शब्द से बच्चे के मन में एक भयानक जानवर की छवि उभरने लगती है, जैसे- सियार, शेर, बाघ आदि। साथ ही माँ बच्चे को यह भी आश्वासन देती है कि वह उस हाउ से बच्चे की रक्षा करेगी और उस हाउ को मार भगाएगी। एक उदाहरण इस प्रकार है :-

"हियाली ए नाहिबी राति
तूरे कान काटि लगामे बाटि
हियालीर मूरते मरुवा फूले
हियाली पालेगोई रतनपूर
ही बूले कान कटा
ही बूले कान कटा
कान कटाईनू की काम करे
कांधत रंगा साती, हातत लोई जाठी-दाव
कान कटाय ल'रार कान काटि फूरे।"[4]

अर्थात् रोते हुए बच्चे को चुप कराने के लिए माँ सियार का नाम लेते हुए उसे डराती है और कहती है सियार हाथ में लाठी और दाव तथा कंधे में लाल रंग का छाता लेकर बच्चों का कान काटता फिरता है। लेकिन माँ सियार को रात में आने के लिए मना करती है और कहती है तुम आने से तुम्हारा कान काटकर मैं बत्ती लगाऊँगी। फिर सियार डरकर रतनपूर भाग जाता है।

[3] भट्टाचार्य, डॉ. बसंत कुमार (2007), असमिया लोकगीत समीक्षा, अरोरा फाइन आर्ट्स बामूनी मैदाम, गुवाहाटी-21, पृ.स. 59
[4] गगै, डॉ. लीला (2008), असमिया लोक-साहित्यर रूपरेखा, बरकटकी एण्ड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, जोरहाट मालौ आली, पृ.स. 57

माँ का हृदय बहुत ही कोमल और ममतामयी होती है। अपने बच्चे के प्रति वह हमेशा सचेत रहती है। बच्चा जब भूख से रोता है तो वह भी व्याकुल हो जाती है और बच्चे के भूख को शान्त करती हुई माँ गाती है :-

"लाई हाले जाले
आबेलि बताहे
लफा हाले जाले पाते
आमारे मईनाई
हालिसे जालिसे
कलि आबेलिर भाते।"[5]

जिस प्रकार संध्या समय के हवा में लाई, लफा हिलते-डुलते रहते है। उसी तरह हमारी बच्ची भी शाम होने पर हिलेगी डोलेगी अर्थात् खेलेगी और शाम ढलने पर खाना खाएगी।

बच्चों का चंदा मामा से रिश्ता बहुत ही पुराना है। बच्चे कभी आसमान में चंद्रमा को देखा करते है तो कभी उसे छूना चाहता है तो कभी उसे पाना चाहता है तो कभी उसके साथ खेलना चाहते हैं। माँ बच्चे के इन भावनाओं को समझती है और चंद्रमा को देखते हुए उससे बाते करती हुई कहती है :-

"जुनबाई ए बेजी एटा दिया
बेजीनू केलई मूना सिलाबलई
मूनानू केलई धन भराबलई
धननू केलई हाती किनिबलई
हातीनू केलई उठी फूरिबलई
हातीत उठी पानीराम घरलै जाय
आलीबाटर मानूहे घूरि घूरि साय।"[6]

अर्थात् चन्द्रमा से माँ सूई माँगती है थैला सिलाने के लिए जिसमें वह धन भरकर लायेगी और उस धन से हाथी खरीदेगी। जिसमें उसका बच्चा बैठकर घूमेगा और रास्ते में आने जाने वाले लोग घूम-घूम कर उसे देखेंगे।

[5] वही, पृ.स. 55
[6] गगै, डॉ. लीला (2008), असमिया लोक-साहित्यर रूपरेखा, बरकटकी एण्ड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, जोरहाट मालौ आली, पृ.स. 56

माँ के लिए उसका बच्चा ही सबकुछ होता है। बच्चे के चेहरे को देखकर वह अपना सारा दुख-दर्द भूल जाती है। माँ की दृष्टि में उसे अपना बच्चा जग में सबसे सुन्दर दिखता है। वह उसके उज्जवल भविष्य की कल्पना करती हुई गाती है :-

"बरसबार मूरते
बकूल फूल फूलिसे
नितौ तिनिपाहि खरे
मईनार मुखलै
साबके नूवारि
हीरा की मूकूता जले।"[7]

माँ कहती है जिस प्रकार वर्ष में एक बार बकूल फूल खिलते है और उसकी पखुरियाँ झर-झर कर सारे वातावरण में सुगंध फैलाकर उसे सुन्दर बना देती है उसी प्रकार हमारी गुड़िया इतनी सुन्दर दिख रही है जैसे उसके चेहरे से हीरा मोती बरस रहे है।

देखा जाए तो अंचल भेद से भी असमिया शिशु गीत अलग-अलग होते हैं। नामनि असम में अलग होते है तो उजनि असम के अलग होते है। नामनि असम को पश्चिम असम के नाम से भी जाना जाता है। नामनि असम के अंतर्गत आने वाले जिला है- बरपेटा, बंगाईगांव, धुबूरी, गुवाहाटी, नलबारी आदि। वही उजनि असम के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र है- जोरहाट, शिवसागर, तिनसुकिया, डिब्रूगड़, धेमाजी, माजुली, गोलाघाट आदि। नामनि असम और उजनि असम की भाषा में भी भिन्नता होती है। इन दोनों क्षेत्रों के भाषा की विविधता की दृष्टि से कुछ गीत इस प्रकार है :-

"डुले बाबा डुले
डूलून गसेर तले
साँप किलकिल करे
साँपरे पेटे आन्डा
बाबा खाय ठान्डा।"[8]

यह दक्षिण-पश्चिम गोवालपारा में गाई जानेवाली गीत है। गोवलपारा के समाज में शिशु-गीत 'निन्दाली गीत' के नाम से भी जानी जाती है।

फिर-

[7] बरुआ, बिरिञ्चि कुमार (2015), असमर लोक-संस्कृति, बीना लाब्रेरी, गुवाहाटी पानबाजार, पृ.स. 43

[8] हुसैन, इस्माइल (2002), असमर सर-सापरिर लोक-साहित्य, मिलेनियाम ग्राफिक्स, अंबिकागिरी नगर गुवाहाटी-28, पृ.स. 70

"आमार मइना हासे
सूनार नूपूर पाये दिया
झूमूर झूमूर नाचे
आय चाँद आय
घूम दिया जा
गाय बियाइले दूध दिम
दूध पिठा बानाइया दिम
आमार सूनारे घूम दिया जा।"[9]

यह कामरूप जिला में गाई जानेवाली गीत है। इन शिशु गीतों में बांग्ला भाषा का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

'खेल-गीत' भी शिशुगीत का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके अन्तर्गत बच्चों के गीतमय खेलों की गणना की जाती है। खेल गीतों में नृत्य, अभिनय, उछल-कूद, वाक्चातुर्य, बुद्धि-परीक्षा, लौकिक आचार, मनोरंजन, शिक्षा आदि का समावेश पाया जाता है। इन गीतों से बच्चों का शारीरिक तथा बौद्धिक विकास सहज एवं स्वाभाविक रूप से होता है। इन गीतों के माध्यम से बच्चों को मनोरंजक कथाएँ भी याद कराई जाती है। इस तरह इन गीतों के माध्यम से खेल-खेल में बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती है। ग्रामीण जनचेतना बच्चों को खेल गीतों के माध्यम से जीवन के यथार्थ का अनुभव कराती है। कुछ खेल गीत इस प्रकार है :-

ओ फूल ओ फूल नूफूल किय
गरूवे जे आग खाय मइनू फूलिम किय
ओ गरू ओ गरू आग खाऊ किय
गरखियाई जे मूक नरखे मइनू नेखाम किय

फिर
रदाली ए र'द दे र'द दे
आली काटी जाली दिम
बड़ पीढ़ा पारि दिम
ताते बहि बहि र'द दे।

[9] वही, पृ.स. 71

नामनि असम में बच्चों के बीच एक खेल प्रचलित है कंकड़-पत्थर छिपाने का। इस खेल में बच्चे एक हाथ में कंकड़ छिपाते हुए दोनों हाथ आगे बढ़ाते है और पूछते है किस हाथ में कंकड़ है। दूसरे बच्चे किस हाथ में कंकड़ है यह निर्णय करने के प्रयास में गीत गाते है :-

"अलौ गुटि तलौ गुटि कसू गुटि लाई
जिखन हातत गुटि आसे, खेइखन हातत पाय।"[10]

अर्थात् जिस हाथ में कंकड़ है वह हाथ मिल जाए। स्कूल में बच्चों को गिनती सिखाने के लिए भी शिशुगीत गाया जाता है। जैसे :-

एक, दुई, तीनी, सारी

आमी बहु खारी खारी
पास, सई, खात, आठ
नितौ आमी पहु पाठ
नयर पासत दह हय
गनी सुवात नाय भय।

इस प्रकार शिशु को खाना खिलाने, नहलाने, उँगली पकड़कर चलना सिखाने, नींद से जगाने, नैतिक शिक्षा देने आदि विभिन्न विषयों से संबंधित असमिया में शिशु गीत गाए जाते है।

शिशु गीत की विशेषताएँ :-

शिशु गीत की प्रमुख विशेषता यह है कि इन्हें संगीतात्मक रूप में बच्चों के मनोरंजन के लिए गाया जाता है। ये गीत बहुत सहज-सरल और आकार में छोटे-छोटे होते हैं, जिसके कारण इन्हें आसानी से कंठस्थ कर सकते है। नवजात शिशु के लिए गाए जाने वाले इन गीतों में तर्क तथा भाव की अपेक्षा सूर की प्रधानता अधिक होती है। शैशव एवं बाल्यावस्था के बच्चों के लिए इन गीतों में इतिहास, सामाजिक विपन्नता एवं पिछड़ेपन आदि का सजीव चित्रण भी किया जाता हैं। ये गीत बच्चों को सुलाने, मनोरंजन करने के साथ-साथ मानसिक विकास के आधार पर उनका आरंभिक साहित्य भी होता है। इन गीतों के माध्यम से बच्चों को दैनंदिन जीवन के साथ नैतिकता की शिक्षा भी दी जाती है। इस प्रकार सरलता, संगीतात्मकता, रसमय भाव, कल्पना, मनोरंजकता आदि शिशु गीत की मुख्य विशेषताएँ होती है। शिशु गीत बच्चों को गुस्से के बजाय अपनी भावनाओं को बेहतर तरीके से व्यक्त करने में मदद करती हैं। शिशु गीत को सुनने से बच्चों में कम उम्र में ही मजबूत भाषा और साक्षरता कौशल विकसित होता है और बच्चे जल्दी ही बोलना भी

[10] भट्टाचार्य, डॉ. बसंत कुमार (2007), असमिया लोकगीत समीक्षा, अरोरा फाइन आर्ट्स बामूनी मैदाम, गुवाहाटी-21, पृ.स. 60

सीख जाते हैं। माता-पिता द्वारा बच्चों को सुलाने एवं उनका मन बहलाने के लिए गाई गई गीत उनमें सम्बन्ध मजबूत बनाने का काम भी करती है। इन गीतों द्वारा माता-पिता और बच्चे के रिश्ते में गहरा प्रभाव पड़ता है। अभिभावक और बच्चे के बीच आत्मीयतापूर्ण रिश्ता कायम होता है। इन विशेषताओं पर ध्यान दे तो शिशु गीत बच्चों के प्रारम्भिक विकास के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। किन्तु आधुनिकीकरण के इस दौर में बच्चे इन गीतों से वंचित होते जा रहे हैं। शहर की व्यस्तता भरे जीवन में माताएँ ये गीत गाना भूल सी गई है।

निष्कर्षतः देखा जाए तो शिशु गीत असमिया ग्राम्य समाज एवं माँ तथा शिशु के भावनाओं से जुड़ी हुई सभी पक्षों को अपने में समेटे हुए है। माँ के लिए संतान जिस तरह प्यारे होते हैं असमिया समाज के लिए ये गीत उतने ही प्यारे है। लेकिन जिस तरह आज समाज आधुनिकता की ओर बढ़ रही है शिशु गीत का प्रचलन भी घटता जा रहा है। इसका कारण यह है कि माताएँ आज बच्चों को सुलाने के लिए शिशु गीत के प्रति रूचि नहीं दिखाती है। किन्तु गाँवों में आज भी इन गीतों का प्रचलन दिखाई पड़ता है। ये गीत बच्चों के कोमल मन पर अमिट छाप छोड़ती है। यही वह आयु होती है जिसमें हम बच्चों को जैसा चाहे वैसा बना सकते हैं। इसलिए माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी इन गीतों के माध्यम से उन्हें अच्छा बालक बनाने और उनमें अच्छी आदतें डालने का प्रयास करते हैं। आजकल स्कूलों में भी शिशु गीतों के माध्यम से खेल-खेल में विभिन्न भाव-भंगिमा द्वारा बच्चों को शिक्षा देने का कार्य किया जा रहा है। अतः शिशु गीत की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. भट्टाचार्य, डॉ. बसन्त कुमार (2007), असमिया लोकगीत समीक्षा, अरोरा फाइन आर्ट्स बामूनी मैदाम, गुवाहाटी-21।
2. नेउग, महेश्वर (2008), असमिया गीति-साहित्य, अरोरा फाइन आर्ट्स बामूनी मैदाम, गुवाहाटी-21 ।
3. हुसैन, इस्माइल (2002), असमर सर-सापरिर लोक-साहित्य, मिलेनियाम ग्राफिक्स, अम्बिकागिरि नगर, गुवाहाटी-28 ।
4. नाथ, द्विजेन (2008), गोवालपरीया लोक-संस्कृति, शराईघाट फटो टाइम्स, बामूनी मैदाम गुवाहाटी ।
5. गगै, डॉ. लीला (2008), असमिया लोक-साहित्यर रूपरेखा, बरकटकी एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, मालौ आली, जोरहाट ।
6. हकचम, डॉ. इउ. आर. (2017), समकालीन असमिया लोक-साहित्य, अलिंपिया प्रकाशन, गुवाहाटी-3 ।

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय
ईमेल: smitasah15@gmail.com, मोबाइल न. : 8486439830